श्री षण्मुख षट्कं

श्री षण्मुख षट्कं

गिरितनयासुत गांगपयोदित गंधसुवासित बालतनो
गुणगणभूषण कोमलभाषण क्रौंचविदारण कुंदतनो |
गजमुखसोदर दुर्जयदानवसंघविनाशक दिव्यतनो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 1 ||

प्रतिगिरिसंस्थित भक्तहृदिस्थित पुत्रधनप्रद रम्यतनो
भवभयमोचक भाग्यविधायक भूसुतवार सुपूज्यतनो |
बहुभुजशोभित बंधविमोचक बोधफलप्रद बोधतनो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 2 ||

शमधनमानित मौनिहृदालय मोक्षकृदालय मुग्धतनो
शतमखपालक शंकरतोषक शंखसुवादक शक्तितनो |
दशशतमन्मथ सन्निभसुंदर कुंडलमंडित कर्णविभो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 3 ||

गुह तरुणारुणचेलपरिष्कृत तारकमारक मारतनो
जलनिधितीरसुशोभिवरालय शंकरसन्नुत देवगुरो |
विहितमहाध्वरसामनिमंत्रित सौम्यहृदंतर सोमतनो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 4 ||

लवलिकया सह केलिकलापर देवसुतार्पित माल्यतनो
गुरुपदसंस्थित शंकरदर्शित तत्त्वमयप्रणवार्थविभो |
विधिहरिपूजित ब्रह्मसुतार्पित भाग्यसुपूरक योगितनो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 5 ||

कलिजनपालन कंजसुलोचन कुक्कुटकेतन केलितनो
कृतबलिपालन बर्हिणवाहन फालविलोचनशंभुतनो |
शरवणसंभव शत्रुनिबर्हण चंद्रसमानन शर्मतनो
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 6 ||

सुखदमनंतपदान्वित रामसुदीक्षित सत्कविपद्यमिदं
शरवण संभव तोषदमिष्टदमष्टसुसिद्धिदमार्तिहरं |
पठति शृणोति च भक्तियुतो यदि भाग्यसमृद्धिमथो लभते
जय जय हे गुह षण्मुख सुंदर देहि रतिं तव पादयुगे || 7 ||

इति श्रीअनंतरामदीक्षित कृतं षण्मुख षट्कं ||